ॐ श्रीसरस्वत्यै नमः

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा
प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र
आलोचनात्मक प्रश्नोत्तर

तुलसीदास

28 मार्च 2020.

'विरुद्धों के सामंजस्य' का अनुपम साहित्यिक प्रयोक्ता, भक्तशिरोमणि तथा अद्भुत विद्या-व्यसनी महाकवि गोस्वामी तुलसीदास का आविर्भाव निविड़ अंधकाराच्छन्न भारतीय समाज के समक्ष प्रखर ज्योतियुक्त समुन्नत प्रकाश-स्तम्भ की तरह हुआ था, जिसकी किरणों का तेज आज भी मंद नहीं हुआ है।

वस्तुतः तुलसीदास हिन्दी के ही सर्वश्रेष्ठ कवि नहीं, अपितु समस्त भारतीय साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवियों की परम्परा में शीर्ष स्थानीय हैं। उनके सर्वव्यापी उदात्त और मर्यादापूर्ण कृतित्व को देखकर ही 'भक्तमाल' के रचयिता नाभादास ने उन्हें "कलिकाल का वाल्मीकि", इतिहासकार स्मिथ ने "मुगलकाल का सबसे महान व्यक्ति" और डॉ० ग्रियर्सन ने 'लोकनायक' स्वीकार किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में — "इन सारी उक्तियों का तात्पर्य यही है कि तुलसीदास असाधारण शक्तिशाली कवि, लोकनायक और महात्मा थे।"

वस्तु वास्तव में गोस्वामी तुलसीदास का 'रामचरितमानस' भारतीय संस्कृति और जनजीवन की समस्त उपलब्धियों का पुंजीभूत रूप है। परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए उन्होंने भगवान राम के पावन जीवन को काव्य का विषय बनाकर हिन्दुओं की बिखरी हुई शक्ति का संगठन किया और उनको सेवा, त्याग, सहृदयता, शील और उदारता का पाठ पढ़ाया। उनकी वाणी में जैसे जादू था; उनका यही जादू समस्त हिन्दू-जाति के लिए वेदमंत्र बन गया।

सन् 1532 ई० में आत्माराम दुबे की धर्मपत्नी हुलसी की गोद हरी करनेवाले सरस्वती के इस वरदपुत्र ने जिस समाज का साक्षात्कार किया था, वह किसी मायने में आदर्श समाज नहीं था। महाकवि तुलसी ने मानो उसी समाज का स्वरूप मूर्तिमान करते हुए लिखा है:—

"बाढ़े खल बहु चोर जुआरा।
जे लम्पट परधन परदारा॥

→

मानहिं मातु-पिता नहिं देवा।
साधुन्ह सन करवावहिं सेवा॥"

तुलसीदास ऐसे ही प्राणियों को 'निशिचर' की संज्ञा देते थे और ऐसे ही 'निशिचरों' से भारतभूमि को त्राण दिलाने के लिए उनके श्रीराम ने भुजा उठाकर प्रण किया था।

तात्पर्य यह कि महाकवि तुलसी का कृतित्व शत-प्रतिशत अपने समाज और प्रकारान्तर से मानव-मात्र को सम्यक दिशा-निर्देश के सद्उद्देश्य से अभिप्रेरित है। मानवता की गुम होती पहचान के बीच इन्होंने एक आदर्श पितृभक्त, एक आदर्श पति-परायणा, एक आदर्श भक्त, एक आदर्श भ्रातृप्रेमी और एक आदर्श मित्र का उज्ज्वल रूप समाज के समक्ष समुपस्थित किया और इसी कारण ये जन-जन के हृदय में बस गये।

यों तो तुलसीदास का सम्पूर्ण कृतित्व ही भारतीय किंवा मानवोचित मर्यादा का सर्वाधिक निखरा हुआ प्रतिबिम्ब है; परन्तु खासकर 'रामचरितमानस' तो इस क्षेत्र में अतुलनीय है। छोटे-छोटे प्रसंगों में भी उन्होंने विशुद्ध भारतीय मर्यादा को ध्यान में रखा है। वन जाते समय जब ग्रामीण बधुएँ प्रश्न करती हैं कि

"कोटि मनोज लजावनहारे। सुमुखि कहहु को आहि तुम्हारे॥"

तो सीता का उत्तर विशेष दर्शनीय है:-

सकुचि सप्रेम बालमृगनयनी।
बोली मधुर बचन पिकबयनी॥
सहज सुभाय सुभग तनु गोरे।
नामु लखन लघु देवर मोरे॥

और फिर संकेत से राम की ओर देखना बिना कहे ही जैसे सब कुछ समझा देता है।

'रामचरितमानस' के अतिरिक्त 'विनयपत्रिका' में महाकवि का भक्त हृदय सामाजिक परिप्रेक्ष्य में बाढ़ के उफान की तरह उमड़ कर सामने आया है और 'गीतावली' में हार्दिक भावों की रागात्मकता जैसे चरम पर पहुँच गयी है। 'कवितावली' में महाकवि का हृदय चतुर्दिक व्याप्त विषमताओं

→

तथा विडम्बना से ग्रस्त जन-समाज का दुःख देखकर जैसे हाहाकार कर उठा है। विलासिता के पंक में डूबे हुए उच्च वर्ग और दरिद्रता, रोग तथा अशिक्षा से त्रस्त निम्न वर्ग को देखकर उनका हृदय जैसे करुणा से विगलित हो उठा है। दशानन के अत्याचार से ग्रस्त लोगों के वर्णन में यही पीड़ा उमड़ पड़ी है:—

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीधमान सोच बस,
कहैं एक-एकन सों 'कहाँ जाई, का करी'?॥

किंकर्तव्यविमूढ़ता की इसी स्थिति से मुक्ति का मार्ग दिखलाने को महाकवि ने राम का परिपूर्ण आदर्शमय चरित्र सामने रखा और कहने की आवश्यकता नहीं कि उनकी भक्ति की बात की तह में कवि का जबर्दस्त संकेत गुण ग्रहण के रूप में शिक्षात्मक तथ्य पर था।

इस प्रकार स्पष्ट परिलक्षित होता है कि शब्द के सच्चे अर्थों में 'गुदड़ी के इस लाल' ने राम को ईश्वरीय अवतार बतलाकर भी जन-जन के हृदय-मन्दिर में प्रतिष्ठित करवा दिया और इस अनुपम काव्य-कौशल ने स्वयं उन्हें भी अद्वितीय - अप्रतिम सिद्ध कर दिया।

प्रस्तुतकर्ता - डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (Asst. Prof.)
हिन्दी विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर
मधुबनी (बिहार)